भूमिका

हिंदी भाषा-भाषियों को ध्यान में रखते हुए, हिंदी माध्यम से अन्य भारतीय भाषाओं के अध्ययन और अध्यापन के लिए तैयार की गई पाठ्य सामाग्रियों की श्रृंखला है 'भारतीय भाषा ज्योती'। इस श्रृंखला की पुस्तकों की रचना भारत सरकार के भारतीय भाषा संस्थान (मैसूर) तथा उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा विभाग के सहयोग से संचालित कार्यशालाओं में हुई थी। 'भारतीय भाषा ज्योति : गुजराती' पुस्तक इस श्रृंखला की एक कड़ी है।

इन पाठ्य सामग्रियों में प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् छात्रों से निम्नलिखित भाषिक निपुणताओं की अपेक्षाएँ की जाती हैं:

1. गुजराती भाषी द्वारा भाषा प्रयोग की विभिन्न स्थितियों में किए जानेवाले दिन-प्रतिदिन के वार्तालापों का सुनकर समझना,
2. रेडियो व टी.वी. पर प्रसारित होनेवाले समाचारों, विज्ञापनों, उद्घोषणाओं और अन्य कार्यक्रमों का सार ग्रहण करना,
3. कक्षा में सहपाठियों के साथ अपनी दिनचर्या के विषय में सरल वाक्यों में बातचीत करना एवं गुजराती भाषियों से इन विषयों पर औपचारिक तथा अनौपचारिक संदर्भों में चर्चा करना,
4. गुजराती भाषा में पुस्तकों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, सूचनापट्टों, इश्तहारों, व्यक्तिगत तथा अन्य प्रकार के पत्रों आदि से संबंधित छोटे छोटे अनुच्छेदों को पढ़ना और साथ ही शब्दकोश और संदर्भ ग्रंथों का उपयोग कर पाना,
5. विभिन्न विषयों पर छोटे छोटे गद्यांश लिखना, व्यक्तिगत एवं अन्य प्रकार के पत्र लिखना तथा अपनी रुचि के परिचित तथा सरल विषयों पर निर्देशित व स्वतंत्र लेख लिखना,
6. शब्दकोश की सहायता लेते हुए गुजराती से हिंदी में और हिंदी से गुजराती में किसी भी गद्य सामग्री का अनुवाद करना, तथा
7. गुजराती भाषा के साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों अथवा परिवेश की जानकारी प्राप्त करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्य पुस्तक की रचना की गई है। भाषा के चारों कौशलों-श्रवण, भाषण, वाचन तथा लेखन पर यहाँ समान रूप से बल दिया गया है। श्रवण और भाषण कौशलों के विकास के लिए प्रत्येक पाठ में वार्तालाप दिए गए हैं और उस के बाद मौखिक अभ्यास के लिए पर्याप्त सामग्री है। इसी प्रकार वाचन और लेखन कौशलों के विकास के लिए प्रत्येक पाठ में एक वाचन अनुच्छेद है और सात ही अभ्यास भी। यह पुस्तक कक्षा में अद्यापक की सहायता से भाषा सीखने के लिए तैयार की गई है। इस लिए लिपि सीखने सिखाने के लिए इस पुस्तक में अलग से कोई प्रावधान नहीं किया गया है। लेकिन भूमिका के बाद लिपि सीखने के लिए उपयोगी संकेत और निर्देश विस्तार पूर्वक

दिए गए हैं। इस के अनुसार अध्यापक कक्षा में लिपि सिखा सकेंगें इन संकेतों की सहायता से उत्साही विद्यार्थी अपने आप गुजराती लिपि का अभ्यास कर सकेंगे।

इस पुस्तक के चार भाग हैं - भूमिका, गुजराती लिपि तथा उच्चारण, पाठमाला और शब्दसूची। पुस्तक के पाठों में भाषा संरचनाओं पर आधारित वार्तालाप तथा अभ्यास, वाचन-लेखन, अनुवाद अभ्यास तथा सरल व्याकरणिक व सांस्कृतिक बिंदुओं के विषय में पर्याप्त जानकारी दी गई है। 'शब्दसूची' में पाठों में आए गुजराती शब्दों को वर्णक्रम में प्रस्तुत कर उनके अर्थ हिंदी में दिए गए हैं।

पाठों का ढाँचा इस प्रकार है -

1. वार्तालाप
2. पाठ में आए नए शब्दों के अर्थ
3. अभ्यास
4. वाचन अनुच्छेद (पढ़िए और समझिए)
5. अनुच्छेद में प्रयुक्त नए शब्दों के अर्थ
6. अनुच्छेद संबंधी अभ्यास
7. अनुवाद तथा लेखन अभ्यास
8. व्याकरणिक तथा सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

पाठ में दिए गए वार्तालाप तथा वाचन अनुच्छेद में एक सी ही संरचनाओं का प्रयोग किया गया है। यही संरचनाएँ पाठ के शिक्षण-बिंदु हैं। अनुवाद तथा लेखन अभ्यास भी इन्हीं शिक्षण-बिंदुओं पर आधारित हैं।

पुस्तक के वार्तालापों का चयन भाषा-प्रयोग की उन सामान्य स्थितियों को लेकर किया गया है जिनका सामना हमें अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में करना पड़ता है। उदाहरण के लिए किसी परिचित के घर जाना, किसी उत्सव में सम्मिलित होना, बढ़ती-महंगाई पर चर्चा करना, किराये का मकान खोजना या मकान बनवाने के कष्टों की चर्चा करना, इलाज के लिए डॉक्टर के पास जाना, किसी दर्शनीय स्थल पर घूमने जाना आदि वार्तालाप के विभिन्न विषयों को अलग ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है जिससे विद्यार्थी यह जान सकेंगे कि गुजराती भाषा में निवेदन कैसे करते हैं, आदेश कैसे देते हैं, मना कैसे करते हैं, नम्रता कैसे अभिव्यक्त की जाती है, हास-परिहास कैसे किया जाता है, सांत्वना कैसे दी जाती है आदि। पाठ के वार्तालाप और वाचन अनुच्छेद की विषय वस्तु में भी यथासंभव साम्य रखने का प्रयास किया गया है। वाचन अनुच्छेदों के लिए लेखन की विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया गया है। जैसे कोई अनुच्छेद वृत्तांत रूप में है तो कोई विवरणात्मक, कोई संवेदनात्मक, कोई आत्मकथा के रूप में। कहीं निबंध शैली को अपनाया गया है तो कहीं संस्मरण का सहारा लिया गया है। कहीं कहानी जैसा सरस माध्यम लिया गया है कहीं पत्र जैसा उपयोगी माध्यम।

पाठमाला में 24 पाठ हैं। इन पाठों में से 20 शिक्षण-पाठ हैं और 4 पुनर्भ्यास पाठ हैं। शिक्षण पाठ 4 इकाइयों में बाँटे गए हैं। प्रत्येक इकाई में पाँच-पाँच शिक्षण पाठ हैं और एक-एक पुनर्भ्यास पाठ है। इस प्रकार इस पुस्तक में पाठ 6, 12, 18 और 24 पुनर्भ्यास पाठ हैं। शिक्षणार्थ पाठों को व्याकरणिक संरचनाओं और शब्दों की संख्या व प्रकार के आधार पर स्तरीकृत किया गया है। स्तरीकरण के मूलतत्व इस प्रकार हैं।

1. परिचित से अपरिचित की ओर
2. सरल से कठिन की ओर
3. प्रत्येक से सामान्य की ओर
4. सामान्य से तकनीकी की ओर

भाषाई संरचनाओं पर आधारित वार्तालापों का स्तरीकरण करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि पाठ्य-सामग्री की स्वाभाविकता बनी रहे। अतः बाद के पाठों में सिखाए जानेवाले शिक्षण बिंदुओं से संबंध कुछ संरचनाएँ आरंभ के पाठों में आ गई हैं। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उस पाठ विशेष की विषय-वस्तु के संदर्भ में उनका उल्लेख आवश्यक था। ऐसी संरचनाओं को उस पाठ की शब्द सूची के हिस्से के रूप में दर्शाया गया है।

शिक्षण पाठों में आई हुई व्याकरणिक संरचनाएँ

प्रत्येक पाठ में दो अथवा दो से अधिक व्याकरणिक संरचनाओं तथा शिक्षण-बिंदुओं का प्रयोग किया गया है। अधिकांशतः ये वाक्य-साँचों के रूप में हैं। प्रत्येक पाठ में आए हुए वाक्य-साँचों को निम्न प्रकार से सूचिबद्ध किया जा सकता है।

पाठ नं. 1

1. i) **अस्तिवाचक (योजक क्रियावाले) वाक्य**
   આ રમાકાંત છે। — ये रमाकांत हैं।
   आ रमाकांत छे।

   ii) **आज्ञार्थक वाक्य**
   આવો, બેસો. — आइए, बैठिए।
   आवो, बेसो।

पाठ नं. 2

अस्तिवाचक क्रियाओं के निषेधरूप

i) શું એટલું પણ યાદ નથી? — क्या इतना भी याद नहीं?
शुं एटलुं पण याद नथी?

ii) **सामान्य वर्तमान कालिक क्रियावाले वाक्य**
તે બજારથી શાક લાવે છે. — वे बाजार से सब्जी लाते हैं।
ते बजारथी शाक लावे छे।

iii) इच्छार्थक क्रियावाले वाक्य और उनके निषेधरूप

મારે પૂરી અને મીઠાઈ તો જોઈએ જ. मारे पूरी अने मीठाई तो जोईए ज।	मुझे पूड़ी और मिठाई चाहिए ही।
અમારે વટાણા નથી જોઈતા. अमारे वटाळा नथी जोईता।	हम को मटर नहीं चाहिए।

पाठ नं. 3

1. सातत्य बतानेवाले वर्तमानकालिक क्रियावाले वाक्य और उनके निषेधरूप

i)	ઘરગથ્થુ દવાઓ ખાઈ રહ્યો છું. घरगथ्थु दवाओ खाई रहयो छुं।	घरेलू दवाएँ खा रहा हूँ।
ii)	પણ કોઈ ફેર પડી રહ્યો નથી. पण फोई फेर पडी रह्यो नथी।	लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ रहा है।

2. अनिविार्यता बतानेवाले वाक्य और उनके निषेधरूप

i)	પ્રવાહી ખોરાક જ લેવો જોઈએ. प्रवाही खोराक ज लेवो जोईए।	तरल भोजन ही लेना चाहिए।
ii)	તીખી વસ્તુઓ ખાવી ના જોઈએ. तीखी वस्तुओ खावी ना जोईए।	तीखी चीज़ें नहीं खानी चाहिए।

3. अनुमतिबोधक वाक्य और उनके निषेधरूप

i)	શું હું જાઉં? शुं हूँ जाऊँ?	क्या मैं जाऊँ?
ii)	હું કેટલા સમય સુધી તીખી વસ્તુઓ ન ખાઉં? हुँ केटला समय सुधी तीखी वस्तुओं न खाऊँ।	मैं कितने समय तक तीखी चीज़ें न खाऊँ?

पाठ नं. 4

1. क्रियाओं के भूतकालिक रूप तथा उनके निषेधरूप

i)	કાલની ફિલ્મમાં એક નવી વાત હતી. कालनी फिल्ममां एक नवी वात हती।	कल की फिल्म में एक नई बात थी।
ii)	નવા કલાકાર ન હતા. नवा कलाकारो न हता।	नये कलाकार नहीं थे।

2. सामान्य भूतकालिक क्रियावाले वाक्य तथा उनके निषेधरूप

i)	કાલે તો અમે ફિલ્મ જોવા ગયા. काले तो अमे फिल्म जोवा गया।	कल तो हम फिल्म देखने गए।

ii) તેથી તેમની બોલીમાં સ્વભાવિકતા ના રહી. — इसलिए उनकी बोली में स्वाभाविकता न रही।
तेथी तेमनी बोलीमां स्वाभाविकता ना रही।

3. क्रिया के उद्देश्यका (प्रयोजन) बोध करानेवाले कृदंतरूप

i) અમે સિનેમા જોવા માટે ગયા. — हम फिल्म देखने के लिए गए।
अमे सिनेमा जोपा माटे गया।

ii) અમે સિનેમા જોવા ગયા. — हम फिल्म देखने गए।
अमे सिनेमा जोवा गया।

पाठ नं. 5

1. सामान्य भूतकालिक सकर्मक क्रियावाले वाक्य जारी हैं।

મામાએ નાસ્તો કર્યો. — मामाजी ने नास्ता किया।
मामाए नास्तो कर्यो।

2. सामान्य भूतकालिक के अनियमित क्रियावाले वाक्य

i) મામાએ મારો પક્ષ લીધો. — मामाजी ने मेरा पक्ष लिया।
मामाए मारे पक्ष लीधो।

ii) તમે કંઈ પણ ખાધું-પીધું નહીં. — आपने कुछ भी खाया-पिया नहीं।
तमे कई पण खाधुं-पीधुं नहीं।

पाठ नं. 6

1 से 5 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओं का पुनरावलोकन।

पाठ नं. 7

1. सामान्य वर्तमानकालिक/भूतकालिक क्रियावाले वाक्य

હું તો તને શોધી રહ્યો હતો. — मैं तो तुम्हें ढूँढ़ रहा था।
हुं तो तने शोधी रह्यो हतो।

2. अनिवार्यता बोधक भूतकालिक क्रियावाले वाक्य

મારે સાંજે સાત સુધીમાં પહોંચી જવાનું હતું. — मुझे शाम सात बजे तक पहुँच जाना था।
मारे सांजे सात सुधीमां पहोंची जवानुं हतुं।

3. सहायक क्रियावाले वाक्य

i) પછી તેને ઘરે લઈ જવાની રજા આપી. — फिर उसे घर ले जाने की अनुमती दी।
पछी तेने घरे लई जवानी रजा आपी।

ii) દીકરીનો જીવ બચી ગયો. — बेटी की जान बच गई।
दीकरीनो जीव बची गयो।

iii)	સાંજે સાત સુધીમાં ત્યાં પહોંચી જવાનું હતું. सांजे सात सुधीमां त्यां पहोंची जवानुं हतुं।	शाम सात बजे तक वहाँ पहूँच जाना था।

4. सहसंबंध सूचक अव्यय शब्द 'જ્યારે..ત્યારે' (न्यारे-त्यारे) 'जब-तब' प्रयोगवाले वाक्य

i)	જ્યારે અરૂણા પોતાની બહેનપણીના ઘરેથી આવી રહી હતી ત્યારે મોટર સાથે ભટકાઈ. ज्यारे अरूणा पोतानी बहेनपणीना घरेथी आवी रही हती त्यारे मोटर साथे भटकाई।	जब अरूणा अपनी सहेली के घर से आ रही थी तब मोटर से टकराई।

पाठ नं. 8

1. सामान्य भविष्यत् कालिक क्रियाओं के वाक्य

આપણે સાબરમતી આશ્રમ જોવા જઈશું. आपणे साबरमती आश्रम जोवा जईशुं।	हम साबरमती आश्रम देखने जाएँगे।

2. सातत्य बतानेवाली (अपूर्व भविष्यत कालिक) क्रियाओं के वाक्य

આપણે ગાંધીનગરમાં ફરી રહ્યા હોઈશું. आपणे गांधीनगरमां फरी रह्या होइशुं।	हम गांधीनगर में घूम रहे होंगे।

3. वर्तमानकालिक कृदंतवाले वाक्य

ગાંધીનગર પહોંચતાં કેટલો સમય લાગશે? गांधीनगर पहोंचतां केटलो समय लागशे?	गांधीनगर पहुँचने में कितना समय लगेगा?

4. पूर्वकालिक कृदंतवाले वाक्य

આપણે મંદિર જોઈને પાછા પથિકાશ્રમ આવીશું. आपणे मंदिर जोईने पाछा पथिकाश्रम आवीशुं।	हम मंदिर देखकर पथिकाश्रम वापस आएँगे।

पाठ नं. 9

1. पूर्ण वर्तमानकालिक क्रियावाले वाक्य

બાળકો તો રમવા ગયાં છે. बाणको तो रमवा गयां छे।	बच्चे तो खेलने गए हैं।

2. पूर्ण भूतकालिक क्रियावाले वाक्य

કથા પુરી થઈ ગઈ હતી. कथा पूरी थई गई हती।	प्रवचन पूरा हो गया था।

3. पूर्ण भविष्यतकालिक क्रियावाले वाक्य

તેણે પાણી પણ ભરી લીધું હશે। उसने पानी भी भर लिया होगा।
तेणे पाणी पण भरी लीधुं हशे।

पाठ नं. 10

1. आदतसूचक (अभ्यासिक) वर्तमानकालिक क्रियावाले वाक्य

હું રોજ સમાચારપત્ર વાંચું છું. मैं रोज समाचार पत्र पढ़ता हूँ।
हुं रोज समाचारपत्र वांचुं छुं।

2. आदतसूचक (अभ्यासिक) भूतकालिक क्रियावाले वाक्य

બા નાહી-ધોહીને આંગણામાં પાણી છાંટતાં હતાં. माँ नहा-धोकर आँगन में पानी छिड़कती थी।
बा नाही धोहीने आंगणामां पाणी छांटतां हतां।

3. आदतसूचक (अभ्यासिक) भविष्यतकालिक क्रियावाले वाक्य

તે સમયે બધી ચીજો સસ્તી હશે. उस समय सभी चीजें सस्ती होंगी।
ते समये बधी चीजो सस्ती हशे।

4. अनिवार्यता तथा इच्छा के बोध करानेवाले वाक्य

મારે પતંગ લાવવી છે. मुझे पतंग लानी है।
मारे पतंग लाववी छे।

पाठ नं. 11

1. सामार्थ्य (शक्यता) बतानेवाले वाक्य

આટલી મોંઘવારીમાં કેમ જીવી શકીએ? इतनी महँगाई में कैसे जी सकते हैं?
आटली मोंघवारीमाँ केम जीवी शकीए?

2. इच्छा तथा आशीर्वाद बतानेवाले वाक्य

ભગવાન તમારું ભલું કરે. भगवान आपका भला करे।
भगवान तमारुं भलुं करे।

3. तत्कालिकता बतानेवाले वाक्य

ઉતાવળ ના કરો, હું હમણાં આવ્યો. जल्दी मत करो, मैं अभी आया।
उतावणना करो, हुं हमणां आव्यो।

पाठ नं. 12

7 से 11 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओं का पुनरावलोकन

पाठ नं. 13

1. भूतकालिक क्रिया विशेषण बतानेवाले वाक्य

મને ઘરે આવ્યે બે કલાક થઈ ગયા છે. मुझे घर आए हुए दो घंटे हो गए हैं।
मने घरे आव्ये बे कलाक थई गया छे।

2. **भूतकालिक कृदंत विशेषण बताने वाले वाक्य**

કમાયેલું ધન વાપરતાં શીખો. कमायेलुं धन वापरतां शीखो।	कमाया हुआ धन खर्च करना सीखो।

3. **वैकल्पिक भविष्यतकालिक क्रियावाले वाक्य**

આજે હું તે પુસ્તક વાંચવાનો છું. आजे हुं ते पुस्तक वांचवानो छुं।	आज मैं वह पुस्तक पढ़नेवाला हूँ।

4. **संज्ञाओं से जन्य संज्ञाओंका प्रयोग बतानेवाले वाक्य**

આપણે સમાજભવનવાળાઓને પણ મળવાનું છે. आपणे समाजभवनवाणाओने पण मजवानुं छे।	हमे समाजभवनवालों से भी मिलना है।

5. **उद्धरण अव्यय रूप 'કે' (के) जो हिंदी के 'कि' के समानवाले मिश्रवाक्य**

આપણા પૂર્વજોએ કહ્યું છે કે બીજાને મદદ કરવામાં સાચું સુખ છે. आपणा पूर्वजोए फह्युं छे के बीजाने मदद करवामां साचुं सुख छे।	हमारे पूर्वजों ने कहा है कि दूसरों की मदद करने में ही सच्चा सुख हैं।

6. **संज्ञार्थक कृदंतों (क्रियावाची संज्ञाओं) का प्रयोग बतानेवाले वाक्य**

કોઈ પણ કામ સારી રીતે કરવું જરૂરી છે. कोई पण काम सारी रीते करवुं जरूरी छे।	कोई भी काम अच्छी तरह करना जरूरी है।

पाठ नं. 14

1. **गुजराती के लिंग वचन का पुनर्बलन**

i)	બગીચામાં ચંપો છે. (પું.) बगीचामां चंपो छे।	बगीचे में चंपा हैं।
ii)	ઘરમાં તપેલી છે. (સ્ત્રી.) घरमां तपेली छे।	घर में पतीली हैं।
iii)	પક્ષી ઊડે છે. (નપું.) पक्षी ऊडे छे।	

2. **वर्तमानकालिक क्रिया विशेषण का प्रयोग**

સરોવર ફરતાં આપણે આસપાસના પ્રાકૃતિક સૌંદર્યને માણી શકીએ છીએ. सरोवर फरतां आपणे आसपासना प्राकृतिक सौंदर्यने माणी सकिए छीए।	सरोवर घूमते हुए हम आसपास के प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद ले सकते हैं।

पाठ नं. 15 सहसंबंध सूचक अव्यय शब्दों के प्रयोग दिखानेवाले वाक्य

i)	જે કામ મનથી થાય તે સારું થાય. जे काम मनथी थाय ते सारु थाय।	जो काम मन से हो वह अच्छा हो।
ii)	તમે જેમ કહેશો તેમ કરીશ. तमे जेम कहेशो तेम करीश।	आप जैसा कहेंगे वैसा करूँगी।
iii)	જ્યાં દહેજ પ્રથા છે ત્યાં મનઃશાંતિ નથી. ज्यां दहेज प्रथा छे त्यां मनः शांति नथी।	जहाँ दहेज की प्रथा है वहाँ मनः शांति नहीं है।

पाठ नं. 16

1. हेतुमद् (शर्तवाले) क्रियावाले वाक्य

જો સરળતાથી પૈસા મળશે તો કોણ છોડશે? जो सरणताथी पैसा मणशे तो कोण छोडशे।	यदी सरलता से पैसे मिलते तो कौन छोडेगा?

2. हेतु-हेतुमद भूतकालिक क्रियावाले वाक्य

જો તેણે સારી રીતે મહેનત કરી હોત તો પરીક્ષામાં પાસ થઈ ગયો હોત. जो तेने सारी रीते महेनत करी होत तो ते परीक्षामां पास थई गयो होत।	अगर उसने अच्छी तरह मेहनत की होती तो वह परीक्षा में पास हो गया होता।

3. क्रिया के होने के समय का बोध करानेवाले सहसंबंधसूचक 'જ્યારથી...ત્યારથી' (ज्यारथी....त्यारथी), 'जबसे...तबसे' अव्यय शब्दवाले वाक्य

જ્યારથી શેરબજાર ઉચકાયું છે ત્યારથી લોકોનું આકર્ષણ એ દિશામાં વધ્યું છે. ज्यारथी शेरबजर उचकायुं छे त्यारथी लोकोनुं आकर्षण ए दिशामां वध्युं छे।	जब से शेयर-बाजार तेजी में है तब से लोगों की रूझान उस दिशा में बढ़ी हैं।

4. परिमाण बतानेवाले सहसंबंधसूचक 'જેટલું..તેટલું' (जेटलुं... तेटलुं) 'जितना...उतना' अव्यय शब्दवाले वाक्य

જેટલું પૈસાનું મહત્ત્વ વધ્યું છે તેટલું શિક્ષણનું સ્તર ઘટ્યું છે. जेटलुं पैसानुं महत्व बध्युं छे तेटलुं शिक्षणनुं स्तर घटयुं छे।	जितना पैसे का महत्त्व बढ़ा है उतना शिक्षा का स्तर कम हुआ है।

पाठ नं. 17

1. विविध प्रकार के विशेषण शब्दोंवाले वाक्य

i) લુચ્ચું પ્રાણી અમારો રાજા ન હોય.
लुच्चुं प्राणी अमारो राज न होय।
घूर्त प्राणी हमारा राजा नहीं होता।

ii) યોગ્ય રાજા તો લોકોની ભલાઈ કરે છે.
योग्य राजा तो लोकोनी भलाई करे छे।
योग्य राजा तो लोगों की भलाई करते हैं।

iii) બુદ્ધિશાળી રાજા તો તે છે.
बुद्धिशाणी राजा तो ते छे।
बुद्धिमान राजा तो वे हैं।

iv) તારા જેવું બીકણ પંખી શું રાજા બનશે?
तारा जेवुं बीकण पंखी शुं राजा बनशे?
तेरे जेसा डरपोक पक्षी क्या राजा बनेगा?

2. तुलना तथा श्रेष्ठता बतानेवाले शब्दों के वाक्य

i) તારાં કરતાં વધુ ઊંચે ઉડનારાં તો ઘણાં પક્ષીઓ છે.
तारां करतां वधुं ऊँचे उडनारां तो घणां पक्षीओ छे।
तुझ से ज्यादा उड़नेवाले तो बहुत पक्षी हैं।

ii) મારાથી ચાલાક બીજું કોણ છે?
माराथी चालाक बीजुं कोण छे?
मुझ से चालाक दूसरा कौन है?

iii) મારાં રંગરૂપ બધાંથી ઉત્તમ છે.
मारां रंग रूप बधांथी उतम छे।
मेरा रंग रूप सबसे उत्तम है।

पाठ नं. 18

13 से 17 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओं का पुनरावलोकन

पाठ नं. 19

1. संज्ञा शब्दों के पुनरुक्त प्रयोगवाले वाक्य

છોકરીઓ છોકરીઓ ડાબીબાજુ અને છોકરાઓ છોકરાઓ જમણીબાજુ ઊભા રહો.
छोकरीओ छोकरीओ डाबीबाजु अने छोकराओ छोकराओ जमणी बाजु ऊभा रहो।
लड़कियाँ लड़कियाँ बाई तरफ और लड़के लड़के दाई तरफ खड़े रहो।

2. विशेषण शब्दों के पुनरुक्त प्रयोगवाले वाक्य

મોટા મોટા છોકરાઓએ બરાબર આઠ વાગે હોળી પ્રગટાવી.
मोटामोटा छोकराओए बराबर आठ वागे होणी प्रगटावी।
बड़े-बड़े लड़कोंने ठीक शाम को आठ बजे होली प्रजवलित की।

3. क्रियाविशेषण के पुनरुक्त प्रयोगवाले वाक्य

મંજુલા ધીરે ધીરે બોલી. — मंजुला धीरे-धीरे बोली।

मंजुला धीरे धीरे बोली।

4. वर्तमानकालिक कृदंत के पुनरुकत प्रयोगवाले वाक्य

પોલિસ બનેલો તુષાર દોડતો દોડતો આવ્યો. — पुलिस बना हुआ तुषार दौड़ता-दौड़ता आया।

पोलिस बनेलो तुषार दोडतो दोडतो आव्यो।

5. पूर्व कालिक कृदंत के पुनरुकत प्रयोगवाले वाक्य

હસી હસીને પેટ દુઃખી ગયું. — हँस-हँस कर पेट दुःख गया।

हसी हसीने पेट दुःखी गयुं।

पाठ नं. 20 प्रेरणार्थक क्रियावाले वाक्य

i) મકાનનું ઉદ્‌ઘાટન પણ કરાવવું પડશે. — भवन का उद्घाटन भी कराना पडेगा।

मकाननुं उद्घाटन पण कराववुं पडशे।

ii) હું નોકરને કહીને તેની પાસે કામ કરાવું છું. — मैं नोकर से कहकर उस से काम करवाता हूँ।

हुँ नोकरने कहीने तेनी पासे काम करावुं छुं।

पाठ नं. 21

1. मिश्र क्रियाओं तथा संयुक्त क्रियाओं के प्रयोगवाले वाक्य

i) કેટલાક વિદ્યાર્થી હડતાલ કરી રહ્યા છે. — कुछ विद्यार्थी हडताल कर रहे हैं।

केटलाक विद्यार्थी हडताल करी रह्या थे।

(संज्ञा + क्रिया से बननेवाली मिश्र क्रिया)

ii) મને તો આવો વ્યવહાર બિલકુલ નથી સારો લાગતો. — मुझे तो ऐसा व्यवहार बिलकुल अच्छा नहीं लगता।

मने तो आवो व्यवहार बिलकुल सारो नथी लागतो।

(विशेषण + क्रिया से बननेवाली मिश्र क्रिया)

iii) આવા જ વિદ્યાર્થી જીવનમાં કંઈક કરી બતાવે છે. — ऐसे ही विद्यार्थी जीवन में कुछ कर दिखाते हैं।

आवा ज विद्यार्थी जीवनमां कंईक करी बतावे छे।

(क्रिया + क्रिया से बननेवाली संयुक्त क्रिया)

iv)	તું પણ શું આટલી એવી વાત પર ગુસ્સો કરવા લાગી? तुं पण शुं आटली ऐवी वात पर गुस्सो करवा लागी?	तुम भी क्या इतनी सी बात पर गुस्सा करने लगी?

(क्रिया + क्रिया से बननेवाली संयुक्त क्रिया)

v)	તેમણે પરીક્ષાખંડની બહાર જ બેસવું પડશે. तेमणे परीक्षाखंडनी बहार ज बेसवुं पडशे।	उन को परीक्षा भवन के बाहर ही बैठना पड़ेगा।

(क्रियावाची संज्ञा + अनिवार्यता दिखानेवाला क्रियारूप)

पाठ नं. 22

1. संयुक्त वाक्य

i)	ઉમાશંકર અને સુન્દરમ્ ગાંધીયુગના સમર્થ કવિઓ હતા અને આદર્શ પુરુષ પણ (હતા). उमाशंकर अने सुंदरम् गांधीयुगना समर्थ कविओ हता अने आदर्श पुरुष पण (हता)।	उमाशंकर और सुंदरम् गांधीयुग के समर्थ कवि थे और आदर्श पुरुष भी (थे)।
ii)	ઉમાશંકરની પ્રતીભાનો પરિચય મેળવવા માટે આપણે તેમની કવિતાઓ વાંચી શકીએ અથવા તેમનાં નાટકો વાંચી શકીએ. उमाशंकरनी प्रतिभानो परिचय मेणवणा माटे आपणे तेमनी कविताओ वांची शकीए अथवा तेमनां नाटक वांची शकीए।	उमाशंकरजी की प्रतिभा का परिचय पाने के लिए हम उनकी कविताऐं पढ़ सकते हैं या उनके नाटक पढ़ सकते हैं।

2. मिश्रवाक्य

i)	જો કે ઉમાશંકર સદેહે નથી પરંતુ અક્ષરદેહે આપણી વચ્ચે જ છે. जो के उमाशंकर सदेहे नथी परंतु अक्षरदेहे आपणी वच्चे ज छे।	यद्यापि उमाशंकरजी सदेह नहीं है तथापि अक्षर-देह से हमारे बीच में मौजूद हैं।
ii)	મુખ્યત્વે કવિ હોવા છતાં પણ તેમણે નિબંધો અને નાટક લખ્યાં છે. मुख्यत्वे कवि होवा छतां पण तेमणे निबंधो अने नाटक लख्यां छे।	बहुतांश में कवि होते हुए भी उन्हों ने निबंध और नाटक लिखे हैं।

3. भावबोधक अव्यय के प्रयोगवाले वाक्य

i)	શાબાશ બેટા! આ રીતે હંમેશાં પહેલો આવજે. शाबाश बेटा! आ रीते हंमेशां पहेलो आवजे।	शाबाश बेटा! इस तरह हमेशां प्रथम श्रेणी लाना।
ii)	છી છી! આવું ગંદું લખાણ હોય? छी छी! आवुं गंदु लखाण होय?	छी छी! ऐसी गंदी लिखावट होती है?

पाठ नं. 23

1. कर्मवाच्य के वाक्य

દૂરદર્શન દ્વારા કેટલાક કાર્યક્રમોનું સીધું પ્રસારણ કરાય છે. दूरदर्शन द्वारा केरलाक कार्यक्रमोनुं सीघुं प्रसारण कराय छे।	दूरदर्शन द्वारा कुछ कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण किया जाता है।

2. भाववाच्य के वाक्य

મારાથી હવે ચલાશે નહીં. माराथी हवे चलाशे नहीं।	मुझ से अब चला नहीं जाएगा।

पाठ नं. 24

19 से 23 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओं का पुनरावलोकन

पहले ही कहा जा चुका है कि हर पाठ के वार्तालाप के बाद उस वार्तालाप में आए हुए नये शब्दों को दिया गया है। ऐसे बहुत से शब्द हैं जो गुजराती भाषा में संस्कृत तथा अन्य भाषाओं से आए हैं। इनमें से बहुत से शब्दों का प्रयोग हिंदी में भी होता है। इस संदर्भ में उन शब्दों पर भी विशेष ध्यान दिया गया है जो रूप की दृष्टि से तो दोनों भाषाओं में समान हैं पर उनके अर्थ गुजराती और हिंदी में बहुत भिन्न हैं। शब्दों के वे अर्थ पहले दिए गए हैं जो उस पाठ के संदर्भ के लिए उपयुक्त हैं। इसके पश्चात् यदि आवश्यक हुआ तो वे अर्थ भी दिए गए हैं जो सर्वाधिक प्रचलित हैं।

पाठों के अभ्यास, उन में सिखाए गए पाठ्य-बिंदुओं को ध्यान में रख कर तैयार किए गए हैं। इन अभ्यासों का उपयोग सीखे हुए बिंदुओं को दोहराने तथा परीक्षा के लिए भी किया जाएगा। नियम के अनुसार छात्र की परीक्षा उन्हीं बिंदुओं में ली जाएगी जो सिखाए जा चुके हैं। लेकिन प्रत्येक पाठ में नए वाक्य अवश्य देखने को मिल जाएँगे। सीखी हुई संरचनाओं और शब्दों की सहायता से विद्यार्थी स्वयं ऐसे वाक्य पढ़ सकता है जिनका प्रयोग सीखे गए पाठों में नहीं आया है। प्रत्येक अभ्यास में परीक्षा के लिए एक समय पर एक ही बिंदु को रखा गया है।

अभ्यास में दिए गए प्रश्न भाषा संरचना और शब्दों से संबंधित हैं। कुछ प्रमुख अभ्यास इस प्रकार हैं - शब्दों का क्रम ठीक करके वाक्य बनाना, वाक्य विस्तार करना, वाक्य रूपों में परिवर्तन करना, एक ही वाक्य को विभिन्न रूपों में कहना, वाक्यांशों को जोड़कर वाक्य बनाना, उचित शब्दों का चयन करना, वाक्य पूरे करना, कर्ता या कर्म के

लिंग और वचन के अनुसार क्रिया में उचित प्रत्यय लगाना, प्रश्नों के उत्तर देना आदि। प्रत्येक पाठ में कम से कम पाँच-छह अभ्यासों का समावेश किया गया है।

वाचन अनुच्छेद का उद्देश्य छात्र के बोधन और शब्द भण्डार को विकसित करना है। इन अनुच्छेदों के विषय में दो प्रकार के प्रश्न पूछे गए हैं - वस्तुनिष्ठ एवं विस्तारनिष्ठ। इन प्रश्नों से छात्र के बोधन तथा अभिव्यक्ति दोनों की ही परीक्षा हो सकेगी।

प्रथम पाँच पाठों की संपूर्ण पाठ्य-सामग्री गुजराती लिपि में और भाषा सिखाने हेतु देवनागरी में भी दी गई है। ऐसा इसलिए किया गया है जिससे विद्यार्थी आरंभ में भाषा सीखने पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकें। जब वह भाषा से थोड़ा बहुत परिचित हो जाएगा तो लिपि सीखने में भी उसे सहायता मिलेगी। वैसे अपेक्षा यही की जाती है कि भाषा और लिपि दोनों का शिक्षण साथ-साथ ही आरंभ किया जाए। गुजराती लिपि सीखने के लिए 20 घंटे की निर्देश सामग्री पर्ताप्त है। इसके पश्चात विद्यार्थी बिना किसी कठिनाई के गुजराती लिपि में पाठ्य सामग्री को पढ़ सकेगा। पहले पाँच पाठों में भाषा का भी कुछ ज्ञान विद्यार्थी को हो जाएगा। छठा पाठ पुनरावलोकन के लिए है। इस में पहली पाठ्य इकाई के शिक्षण बिंदुओं पर विद्यार्थी के अभी तक सीखे गए भाषाई बिंदुओं की परीक्षा हो जाएगी। छठे पाठ से चौबीसवें तक के पाठों को देवनागरी में नहीं दिया गया है क्योंकि अब तक छात्र गुजराती लिपि से परिचित हो गए होंगे। व्याकरणिक तथा सांस्कृतिक टिप्पणियों में अवश्य व्याख्या के लिए सरल और साधारण भाषा का प्रयोग किया गया है। प्रयास यही रहा है कि क्लिष्ट तकनीकी शब्दावली का कम से कम प्रयोग किया जाए। छात्र को चाहिए कि वह व्याकरणिक संरचनाओं का अच्छी तरह अभ्यास कर उन्हें पूरी तरह हृदयंगम कर ले। इससे व्याकरण के नियमों को समझना सरल हो जाएगा।

पुस्तक का अंतिम खंड है - शब्दसूची। पाठों में प्रयुक्त शब्दों की सूची वर्णमाला के क्रम में दी गई है। ध्यान देने की बात यह है कि इसमें शब्दों के मूल रूप अर्थात् कोशीय रूप को ही स्थान दिया गया है। संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों का कोशीय रूप ही दिया गया है, न कि उनके रूपांतरित रूप। जैसे 'ઘરના' (घरना) 'घर का', 'ઘરમાં' (घरमां) 'घर में', 'ઘ રથી' (घरथी) 'घर से' आदि रूप न देकर केवल 'घर' शब्द को ही सूची में दिया गया है। इसी तरह क्रियाओं के भी कोशीय रूपों को ही सूची में स्थान दिया गया है, काल और वृत्ति के अनुसार क्रिया के विभिन्न रूपों को नहीं। जैसे-यहाँ केवल 'કરવું' (करवुं) 'करना' रूप को ही रखा गया है, इससे बने 'કરશું' (करशुं), 'કરે છે' (करे छे), 'કર્યું' (कर्युं), 'કરો' (करो) 'करेंगे, कर रहा है, किया है, कीजिए' आदि रूपों को नहीं ।

शब्दसूची में गुजराती शब्दों के दाहिनी तरफ उन शब्दों के हिंदी अर्थ दिए गए हैं। दोनों के बीच में उन पाठों की क्रम संख्याएँ भी दी गई हैं, जिनमें वे शब्द प्रयुक्त हुए हैं। चूंकि प्रत्येक पाठ में दो दो शब्द सूचियाँ हैं; अतः पाठ के वार्तालाप में आए हुए शब्दों को संख्या के बाद 'क' और वाचन अनुच्छेद के शब्दों को 'ख' रूप में दिखाया गया है। उदाहरण के लिए 'તરત' (तरत) 'शीघ्र' शब्द के सामने 3(क) लिखा हुआ है। इसका अर्थ है यह शब्द तीसरे पाठ के वार्तालाप में प्रयुक्त हुआ है। 'ધોરણ' (धोरण) 'कक्षा' शब्द की दाहिनी तरफ 1(ख) दिया गया है। इसका अर्थ है यह शब्द प्रथम पाठ के वाचन अनुच्छेद में है। इनके अलावा प्रत्येक शब्द की व्याकरणिक कोटी दिखाई गई है और प्रत्येक संज्ञा का

लिंग भी बताया गया है। शब्दसूची के बाद गुजराती गिनती 'एक' से 'सौ' तक संख्या में तथा शब्दों में दी गई है।

इस पुस्तक को कक्षा में पढ़ानेवाले अध्यापकों से दो तीन बातें कहना ज़रूरी है। किसी भी भाषा को पढ़ाने के लिए कोई भी एक तरीका ऐसा नहीं है जो पूरी तरह समर्थ हो या अपने आप में पूर्ण हो। विशष रूप से द्वितीय भाषा पढ़ाने के संदर्भ में यह बात शत-प्रतिशत सत्य है। द्वितीय भाषा सीखने के लिए विद्यार्थी को कक्षा के भीतर और बाहर एक-जैसा ही प्रयास करना होगा। विद्यार्थी सीखी गई संरचनाओं और शब्दों को जितना अधिक दोहराएगा, उनका जितना अधिक प्रयोग करेगा, उतना ही उसके उच्चारण और बोधन में सुधार होगा। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे सिखाई गई संरचनाओं तथा गुजराती शब्दों के अभ्यास के लिए कक्षा में उचित वातावरण तैयार करें। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा को उसके परिवेश में रखकर ही सीखना और सिखाना चाहिए। इससे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया सरल भी होगी और स्वाभाविक भी।

सिखाई गई संरचनाओं और शब्दों का पर्याप्त अभ्यास करवा लेने के बाद शिक्षक को चाहिए कि वह पूरे पाठ को ऊँचे स्वर में पढ़ें। शिक्षक का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए। अभिव्यक्ति के अनुसार उसके स्वर में उचित उतार-चढ़ाव भी होना चाहिए। पाठ का पहला वाचन धीमी गति से किया जाए जिससे विद्यार्थी प्रत्येक ध्वनि, शब्द और वाक्य को स्पष्ट रूप से सुन सकें। इसके पश्चात् पाठ को भाषा की स्वाभाविक गति के अनुसार पढ़ना चाहिए। फिर अपने साथ विद्यार्थियों को भी सामूहिक रूप में पाठ को दोहराने के लिए कहना चाहिए। तत्पश्चात् बोधन संबंधी प्रश्न पूछे जाएँ। यदि विद्यार्थियों को प्रश्नों के उत्तर देने में कठिनाई हो तो शिक्षक उनकी मदद करें। इतने अभ्यास के बाद विद्यार्थी स्वतः उस पाठ का वाचन कर पाएगा और समझ सकेगा। यदि छात्र के उच्चारण में कोई त्रुटि हो तो शिक्षक उस त्रुटि को दोहराए बिना सही रूप का परिचय दें। इस अभ्यास के पश्चात् भी विद्यार्थियों के मन में यदि कोई संदेह या प्रश्न रह जाए तो शिक्षक उसका निवारण करें। हमारे विद्यार्थी वयस्क भी हो सकते हैं, अतः बार बार दोहराने में उन्हें हिचक भी हो सकती है और उनके लिए यह अभ्यास अरुचिकर भी हो सकता है। ऐसी अवस्था में शिक्षक अपनी सुविधानुसार व्यक्तिगत रूप से उनकी सहायता करें। सांस्कृतिक और व्याकरणिक टिप्पणियों को कक्षा में न पढ़वा कर, घर में पढ़ने के लिए कहें। उस के बाद विद्यार्थियों के संशयों का निवारण कक्षा में कर सकते हैं।

छात्रों से वाचन अनुच्छेदों को मौन रूप से पढ़ने के लिए भी कहें। अनुच्छेद के विषय में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वतः देने का प्रयास करें। आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक की मदद लें। शिक्षक छात्र को इतना समय अवश्य दें कि वह पूरे अनुच्छेद को मौन रूप से 2-3 बार पढ़ सकें। इसके पश्चात् यदि समय रहे तो प्रत्येक छात्र से बारी बारी से उस अनुच्छेद को ऊँचे स्तर में पढ़ने के लिए कहें। ध्यान रहे कि कक्षा समाप्त होने से पहले अंतिम वाचन शिक्षक द्वारा ही किया जाए जिससे छात्र के कानों में सही उच्चारण दर्ज होता रहे।

अनुवाद और लेखन का अभ्यास छात्र को गृहकार्य के रूप में दिया जाए। शिक्षक सावधानी पूर्वक जाँच करें और छात्र के संदेह और समस्याओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा कर उनका निदान करें।

कुछ पाठों में गुजराती भाषा के प्रचलित मुहावरों व कहावतों का प्रयोग हुआ है। यदि हिंदी में भी उसी तरह के मुहावरे हों तो शिक्षक उनका सहारा लेते हुए अर्थ स्पष्ट करें। यदि हिंदी में ऐसे मुहावरे न हों तो शिक्षक विभिन्न वाक्यों में उनका प्रयोग करके उन के अर्थ स्पष्ट करें।

प्रत्येक पाठ के वार्तालाप में सभी वाक्यों का हिंदी अनुवाद दिया गया है। अनुवाद करते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि हिंदी भाषा की अपनी प्रकृति बनी रहे। पर कहीं कहीं हिंदी में कुछ वाक्य बनावटी या अस्वाभाविक लग सकते हैं। गुजराती भाषा की कुछ विशेष संरचनाओं के प्रयोग देने के प्रयत्न में ऐसा हो गया है। अनुवाद केवल इसलिए दिया गया है जिससे छात्र अर्थ समझ सकें। अनुवाद का प्रयोग गुजराती भाषा सीखने के लिए न किया जाए। भाषा केवल संरचनाओं व शब्दों के अभ्यास द्वारा ही सीखी जा सकती है। हिंदी अनुच्छेद का गुजराती भाषा में अनुवाद करते समय छात्र यही प्रयास करें कि उसका अनुवाद गुजराती भाषा की संरचना में हो, हिंदी की संरचना में नहीं। वाचन अनुच्छेदों के हिंदी अनुवाद नहीं दिए गए हैं। ऐसा इसलिए किया गया है जिससे छात्र गुजराती भाषा को उसी भाषा के माध्यम से ही समझने का प्रयास करें और स्वयं उसका हिंदी में अनुवाद करने का प्रयास करें।

भाषा शिक्षण को अधिक प्रभावशाली तथा रोचक बनाने के लिए गुजराती भाषा के परिवेश का अनुभव तथा गुजराती भाषा भाषियों से संपर्क स्थापित करना महत्वपूर्ण है। ऐसा प्रयास किया जाए कि छात्रों को गुजराती भाषा-भाषियों के संपर्क में आने तथा संबंधित भाषा के गीत, कविताएँ, वार्तालाप, भाषण आदि सुनने का अवसर मिल सकें। साथ ही छात्रों को गुजरात के महान साहित्यकारों, नेताओं तथा अन्य विभूतियों के चित्र भी दिखाए जाएँ। यदि उपलब्ध हो सकें तो गुजरात के हस्तशिल्प के नमूनों से कक्षा को सजाया जाए। संभव हो तो कक्षा में गुजरात के प्राकृतिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व के चित्र लगाए जाएँ तथा वहाँ की विभिन्न ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का ऑडियो-वीडियो माध्यम से भी परिचय कराया जाए।

वार्तालाप, वाचन अनुच्छेद तथा अनुवादों के लिए अनुच्छेदों का लेखन करते हुए भी यह प्रयास किया गया है कि इनके द्वारा गुजरात के जीवन, कला, संस्कृति तथा इतिहास का परिचय छात्रों को हो।

इस पाठ्यक्रम के पश्चात् छात्रों से जो भाषिक निपुणताओं की अपेक्षाएँ की गई हैं उनका विवरण पहले ही दिया जा चुका है। वास्तव में शिक्षार्थियोंने इस पुस्तक से कितना सीखा है वह इस पुस्तक की कसौटी भी है और मूल्यांकन भी। यह प्रयास प्रायोगिक है। इसमें शिक्षकों एवं छात्रों की व्यावहारिक समस्याओं के आधार पर सुधार की बहुत सी संभावनाएँ हैं। इस दिशा में सकारात्मक सुझावों का स्वागत है।

मेरी बात अधूरी रह जाएगी यदि मैं भारतीय भाषा संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. (डॉ.) ई. अण्णामलै तथा उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा विभाग के पूर्व भाषा-परामर्शी प्रो. (डॉ.) गोविंद शर्मा रजनीश के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट न करूँ क्योंकि भारतीय भाषा ज्योति शृंखला की पुस्तकों का संकल्पन, रूपांकन तथा संपादन करने तथा कार्यशालाओं के संचालन का चुनौती पूर्ण उत्तरदायित्व इन्हीं महानुभावों द्वारा मुझे सौंपा गया था। '*भारतीय भाषा ज्योति*' शृंखला की पुस्तकों का निर्माण काफ़ी पहले हो गया था; पर यह बहुमूल्य सामग्री बरसों तक प्रकाशन की प्रतीक्षा करती रही। संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. (डॉ.) ओंकार नाथ कौल तथा संस्थान के वर्तमान निदेशक प्रो. (डॉ.) उदय नारायण सिंह के प्रयासों से ही इन पुस्तकों को प्रकाश की किरण देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। इन सबके प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ। विशेष रूप से प्रो. सिंह ने हिंदी के माध्यम से तैयार की गई '*भारतीय भाषा ज्योति*' की शृंखला की सभी पुस्तकों के प्रकाशन में बहुत दिलचस्पी ली है। इस शृंखला को उत्तरोत्तर आगे बढ़ाने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है।

पुस्तक निर्माण कार्यशाला में श्रीमती स्वाति हार्डीकर तथा श्री. हसमुखराय जोशी का अत्यंत रचनात्मक योगदान रहा। इनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। कार्यशाला में हिंदी विशेषज्ञ के रूप में प्रो. (डॉ.) मुरारीलाल उप्रेति की पांडित्यपूर्ण प्रतिभागिता के लिए भी मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

उक्त कार्यशाला के उपरांत आयोजित पुनरीक्षण-कार्यशाला में संशोधन, परिवर्धन, पुनर्लेखन आदि का कार्य तत्परता से संपन्न कर सामग्री को प्रकाशन योग्य बनाने के लिए डॉ. पूरन सहगल, श्री. भरत ठाकुर तथा कुमारि. विनु रतलानी के अमूल्य योगदान के लिए उनके प्रति भी मैं हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। प्रथम कार्यशाला के बाद पुस्तक की पांडुलिपि पढ़कर रचनात्मक सुझाव देने केलिए मैं प्रो.(डॉ).डी.एम. जोशी का भी आभारी हूँ।

श्री. भरत ठाकुर तथा श्रीमती. अनिता बदरिनाथ को धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने अतीव ध्यान तथा लगन से इस पुस्तक के डी.टी.पी. का काम किया है। हमारे संस्थान के पुस्तकालय के अध्यक्ष डॉ.सी.आर. सुलोचना, तथा उपाध्यक्ष डॉ.बी.ए.शारदा, डॉ.आर. सुमनकुमारी और कॉटलोगर मीर निस्सार हुसैन, कंप्यूटर केंद्र के प्रो. (ड़ॉ). साम् मोहन लाल तथा उन के सहकर्मी, कलाकार श्री. परमानंद बारिख तथा श्री.ह. मनोहर, हमारे मुद्रणालय के प्रबंधक श्री.एस.बी. बिश्वास तथा उनके सहयोगी तथा प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष प्रो.(डॉ). रामसामी तथा उन के सहयोगी श्री.आर. नंदीश इन सब का भी मैं यहाँ कृतज्ञता पूर्वक स्मरण करती हूँ। संस्थान के पाठ्य सामग्री निर्माण केंद्र के मेरे सहयोगी श्री.एस्.एस. यदुराजन, डॉ.बी. मल्लिकार्जुन, डॉ.आई.एस. बोरकर, श्रीमती. टी.वी. वाणी तथा कुमारी सुधा फाटक की सहकारिता भी अविस्मरणीय है। उसी प्रकार हमारे लेखा विभाग के मुख्य श्री.बी.जी. मंजुनाथ, और उन के सहकर्मी श्री.एन. यतिराजु तथा श्री.एस. राजु भी कार्यशालाओं के संचालन में मेरी मदद की है और मेरे धन्यवाद के पात्र हैं।

मैं अपने पति प्रो.के.वी. श्रीनिवासन के प्रति मेरी अपार कृतज्ञता यहाँ प्रकट करती हूँ जिन्होंने महीनों तक चलनेवाली मेरी कार्यशालाओं के संचालन में महत्वपूर्ण शैक्षणिक तथा सामयिक सहकारिता दी है। छुट्टि के दिनों तथा ऑफिस समय के बाहर भी घंटों तक घर की चिंता न कर के 'भारतीय भाषा ज्योति' शृंखला की पुस्तकों के निर्माण में मग्न होना मुझे उन की ही मदद से कार्यसाध्य हुआ है।

उन सभी छात्रों एवं शिक्षकों के प्रति मैं अग्रिम रूप से अपना आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जो इस सामग्री का उपयोग करेंगे एवं इस के विषय में अपने विचार तथा प्रतिक्रियाएँ हम तक पहुँचाएँगे।

मैसूर
15/5/2005

बी. श्यामला कुमारी
प्रो. एवं उपनिदेशक
भारतीय भाषा संस्थान